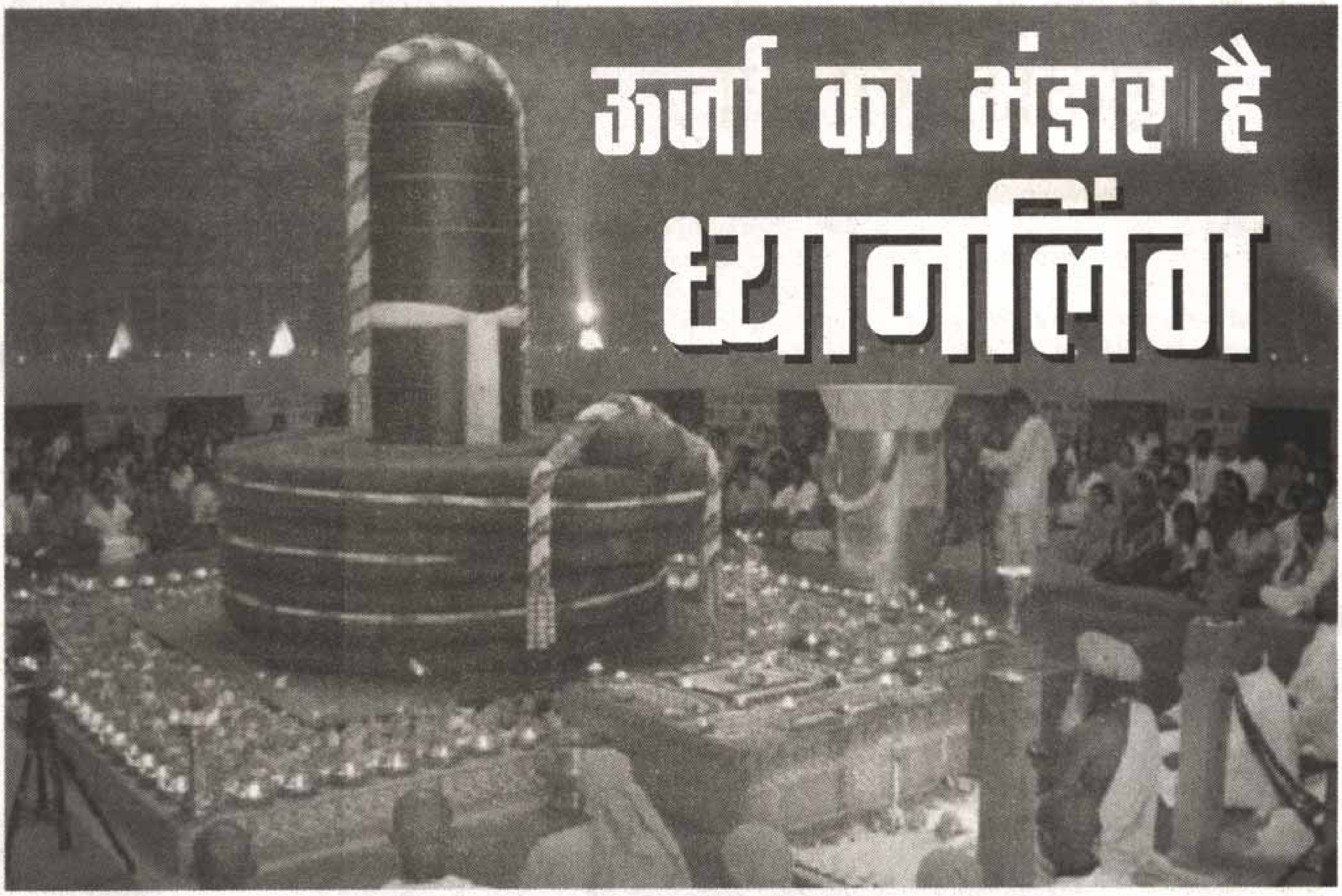

ऊर्जा का भंडार है ध्यानलिंग

ध्यानलिंग योगिक मंदिर कोयम्बटूर में स्थित है और भारत की गौरवपूर्ण परम्परा का एक भाग है। ध्यानलिंग योग विज्ञान का स्वच्छ सार है, यह शक्तिशाली ध्यानशील स्थान न तो किसी विशेष विश्वास का उल्लेख करता है और न ही इसकी व्यवस्था किसी धार्मिक कृत्य प्रार्थना या पूजा पर विश्वास करती है। ध्यान से अनभिज्ञ लोगों के लिए सिर्फ कुछ क्षणों तक शांतभाव से ध्यानलिंग के कार्यक्षेत्र या आसपास चारों ओर बैठना ही पर्याप्त है। ध्यानलिंग उन्हें गहरी ध्यान अवस्था और दैवीय ऊर्जा का अनुभव कराता है, जो इस तेजस्वी रूप से अधिप्रवाह हो रही है।

ध्यानलिंग सद्गुरू जग्गी वासुदेव जी द्वारा स्थापित लिंग हैं, यह लिंग तीन साल की तीव्र परिश्रम के बाद प्रबल प्राण प्रतिष्ठा के द्वारा निर्मित हुआ है यह 13 इंच 9 सेंटीमीटर का सबसे बड़ा पारे का पूरे संसार में एक अनूठा लिंग है। जो चमत्कारिक ऊर्जा से परिपूर्ण है। आध्यात्मिक अर्थ के अनुसार ध्यानलिंग एक गुरु है, जिसके पास बैठकर साधक उसकी ऊर्जा में सरलता से साधना कर सकता है। साधक के लिए यह अनुभव वैसा ही है जैसा उसे अपने किसी गुरु के पास बैठकर मिलता है।

जीवन के सभी पहलू जो इंसान को सात चक्रों के रूप में, चरम सीमा तक कार्यशील करके बांधे हुए हैं यहां इस ध्यानलिंग सुरक्षित हैं। ध्यानलिंग आध्यात्मिक और आलौकिक मुक्ति का प्रमुख द्वार है, जो साधक को साधना और जीवित गुरु के साथ चरम संपर्क स्थापित करने का अवसर देता है, जो पारम्परिक रूप से बहुत कम का चयन करता है। वैलनगिरी पर्वतों की पादगिरी पर स्थित ध्यानलिंग परलौकिक तरंगों का एक दीर्घकाय अस्तित्व है। पृथ्वी का प्राकृतिक रंग, ग्रेनाइट और अनियमित धरातल आकारों का मिश्रण यह मंदिर परलौकिय स्वर्गीय व्यापकता को, एक योग्य वातावरण को उत्पन्न करता है ताकि इंसान ध्यानलिंग के सौंदर्य व उसकी ऊर्जा को ग्रहण कर सके है।

ध्यानलिंग ही क्यों?

मूलभूत रूप में शरीर के पांच भाग हैं, या यूं कहें शरीर के पांच खोल हैं। भौतिक काया, मानसिक काया, ऊर्जा काया, दैवीय काया और परम सुखी काया। अगर कोई भौतिक काया, मानसिक काया और ऊर्जा काया के द्वारा कोई विशेष परिवर्तन लाता है, तो यह परिवर्तन अस्थायी होता है और जीवन के किसी क्षण में खो सकता है। जैसे ही यदि कोई मनुष्य दैवीय काया स्तर को छू लेता है तो यह परिवर्तन अविनाशी होता है।

ध्यानलिंग उस व्यक्ति को परिवर्तन कर देता है जो दैवीय काया के साथ उसके दायरे में आता है। यद्यपि जो व्यक्ति ध्यान के बारे में कुछ नहीं जानता, वो आकर यदि इस स्थान पर बैठ जाए तो वह अपने खुद के स्वभाव से ही ध्यानी बन जाएगा। यह ध्यानलिंग की विशेषता है। यह इस प्रकार का औजार है।

जब आप ध्यान करते हैं, तो आप में और काया में, आप और मन में दूरी होती है। एक बार अगर ये खूबी आपके अंदर खिल जाए, तो आप अपने अंदर एक राजा की तरह महसूस करेंगे तब आपके दुखों का अंत हो जाएगा।

ध्यानलिंग के पास एकाग्रता या ध्यान के दौरान प्राण प्रतिष्ठा की प्रबल प्रक्रिया के द्वारा, सातों चक्रों की ऊर्जा को एक चरम चोटी तक उठाया जा

सकता है और उस ऊर्जा को भीतर ही कैद करके रखा जा सकता है। जिसका असर अगले 5000 वर्षों तक देखा जा सकता है।

आज विश्वस्तर पर लोगों की आध्यात्मिक लालसा ज्यादा है जो कि पहले कभी न हीं थी। अगर इंसान के अंदर जानने की लालसा, विकास की लालसा, वर्तमान की सीमाओं से परे जाने की लालसा जाग जाए तो ध्यानलिंग की ऊर्जाएं वहां जरूर पहुंचेगी।

ध्यानलिंग पूरे विश्व के लिए एक बेमिसाल संभावना है, ऊर्जा केंद्र का विशाल अनुपात और एक स्थान जहां सीमा से सीमारहित रोशनी एक क्षण में हो सकती है।

ध्यानलिंग का निर्माण

ध्यानलिंग सदा अलौकिक एवं बुद्धत्व को प्राप्त व्यक्तियों का सपना रहा है। विश्व में दूसरा कोई ध्यानलिंग विद्यमान नहीं है। इसी लिंग के जैसा एक निकटतम प्रयास एक हजार वर्ष पूर्व भोपाल में किया गया था, यद्यपि वह प्रक्रिया महान थी, परन्तु अंतिम अवस्था में असफल हुआ। यद्यपि ध्यानलिंग का अस्तित्व यौगिक विद्या में है परंतु धर्म ग्रंथों में उसका कोई उल्लेख नहीं है।

ऐसे में ध्यानलिंग की प्रतिष्ठा सदगुरु जी को एक गंभीर चुनौती लगी, उनका दृष्टिकोण सिर्फ उनके सहज ज्ञान की समझ और आध्यात्मिक प्रक्रियाओं पर दक्षता पर आधारित थी। ध्यानलिंग की प्रतिष्ठा के अतिरिक्त इस मंदिर के निर्माण में जैसे सद्गुरु कहते हैं ध्यानलिंग के लिए एक योग्य आभूषण, बहुत गूढ़ता शामिल है। वह नमुना जो चुना गया था वह एकदम नवीन था और उसके पहलुओं पर दोबारा कार्य करने की आवश्यकता थी। ढांचें का आकार और समय भी निश्चित किया, हजारों स्वयंसेवक और कार्यकर्ता इसके निर्माण में शामिल होने के लिए उनके समर्पण की जरूरत थी।

अंततः अनेक जटिलताओं के बाद 24 जून, 1999 को ध्यानलिंग प्रतिष्ठित किया गया, और इसने पूरी दुनिया को अपनी मौजूदगी से आशीष दिया। 23 नवंबर, 1999 को ध्यानलिंग विश्व कल्याण के लिए प्रस्तावित किया गया। यह सदगुरु के लिए यह उनके गुरु की इच्छापूर्ति थी।

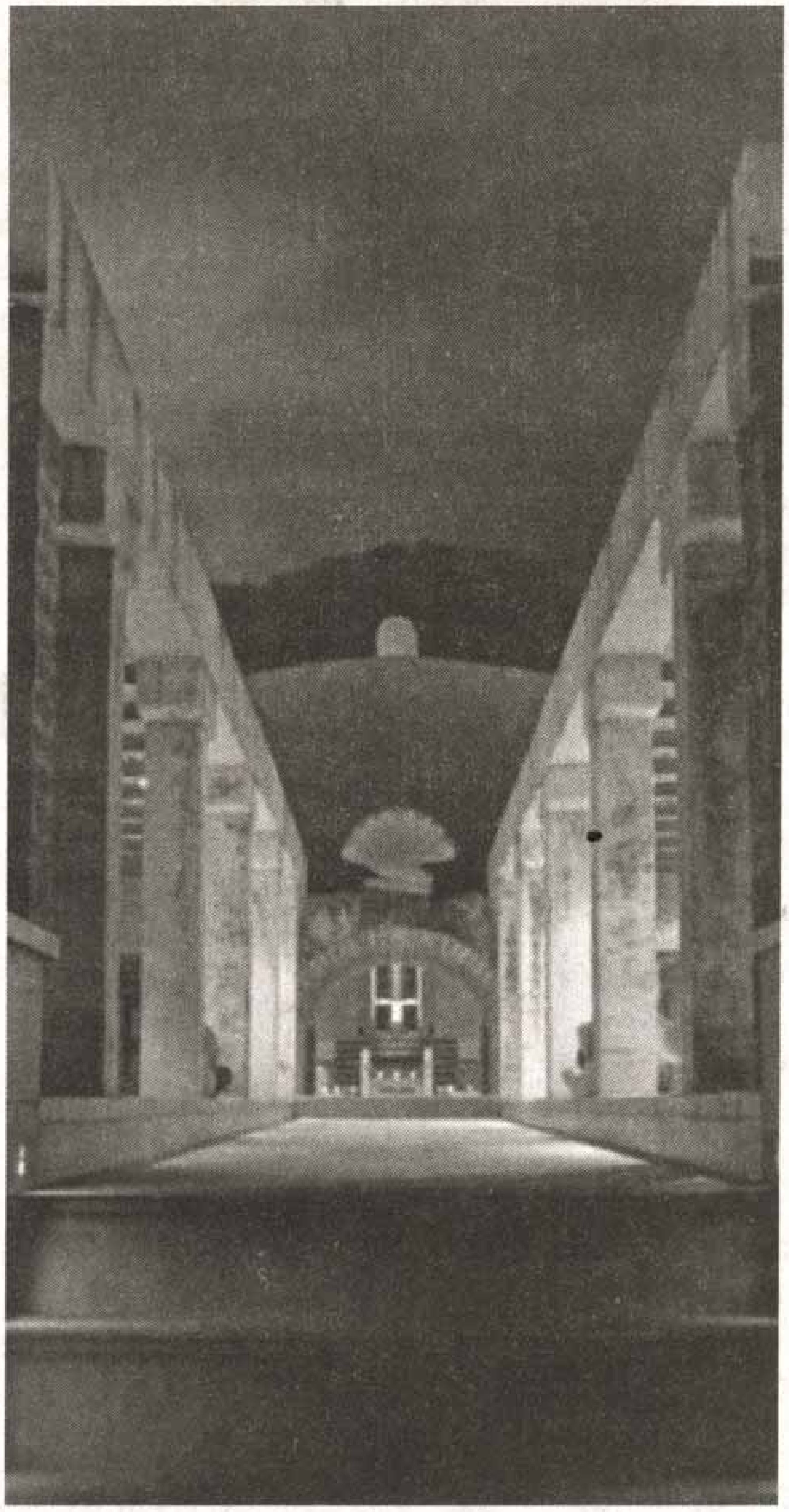

ध्यानलिंग की विशिष्टता

यह एक तांबे की नली जैसा, ठोस पारे से भरा, लिंगाकार विशिष्टता यह है कि इसमें सातों चक्र स्थापित हैं।

ध्यानलिंग की यही विशेषता है कि इसमें सातों चक्रों को उनकी चरम चोटी तक की ऊर्जा प्रदान की हुई है। यह उच्चतम संभव उपाय है, अर्थात् आप इससे ऊर्जा ग्रहण करके उसे पूरी तादात में ऊपर तक ले जा सकते है और अपने जीवन का रूपांतरित कर सकते हैं।

इसे प्रतिष्ठित करने के लिए सूक्ष्म साधना में साढ़े तीन वर्ष लगे। इसे संस्कारित करते समय जो परिस्थितियां साक्ष्य लोगों ने बताई वह अविश्वसनीय है। सूत्र बताते हैं कि कई सिद्धों और योगियों ने ध्यानलिंग को बनाने का प्रयास किया, परन्तु बहुत से कारणों से वह सभी आवश्यक तत्व कभी एक साथ इकट्ठे नहीं हुए। पर बाकी सभी लिंग कभी पूरे नहीं हुए।

ध्यानलिंग का विज्ञान

संस्कृत में ध्यान का अर्थ है एकाग्रता और लिंग का अर्थ है रूप। जब व्यक्ति अपने आप में गहन ध्यान अवस्था में आता है, तब व्यक्ति की आध्यात्मिक शक्ति प्राकृतिक रूप से लिंग का आकार ग्रहण कर लेती है। इसी समझ के साथ लिंग को भारत में, पूर्व वैदिक काल से ही पूजा व सम्मान दिया गया है। सदगुरु जी ने उन्हें ढूंढा है। यह देखने में अंडे के आकार जैसा होता है। यद्यपि पुराणों में यह शिव के साथ जोड़ा गया, परंतु वैज्ञानिक रूप से, यह आकार ही सिर्फ ऐसा आकार है जो इस ऊर्जा को 12 माह संरक्षित रखने के काम आ सकता है।

लिंग की उत्पत्ति इस प्रकार की गई है कि जो भी ध्यान के बारे में नहीं जानते वह भी ध्यान का अनुभव कर सकते हैं। यह एक विज्ञान है, यह किसी धर्म से संबंध नहीं रखता। जो भी ध्यानलिंग के दायरे के अंदर आता है। उसमें चेतना के चरम चोटी तक पहुंचने की शक्ति आ जाती है।

ध्यानलिंग को ग्रहण करने के लिए भक्ति की आवश्यकता नहीं है कोई इसके भक्ति से भी इसके निकट जा सकता है, परंतु यदि भक्ति नहीं है तो भी हर कोई अंतर परिवर्तन का अनुभव कर सकता है। अगर वो सिर्फ ध्यानलिंग की ऊर्जाओं के प्रति ग्रहणशील और उपलब्ध हो।

भारत में यह धारणा है कि यदि कोई धन चाहता तो उसे विशेष मंदिर जरूर जाना चाहिए। यदि कोई स्वास्थ्य चाहता है तो उसे दूसरे मंदिर जाना चाहिए, इसी प्रकार अलग-अलग इच्छाओं के लिए अलग-अलग मंदिर में जाना चाहिए और लगभग सदा ऐसा ही करते हैं। यह विश्वास इसलिए है क्योंकि जीवन का एक पहलू मंदिर में सुरक्षित होता है ध्यानलिंग में जीवन के सभी पहलुओं को सात चक्रों के रूप में सुरक्षित किया गया है।

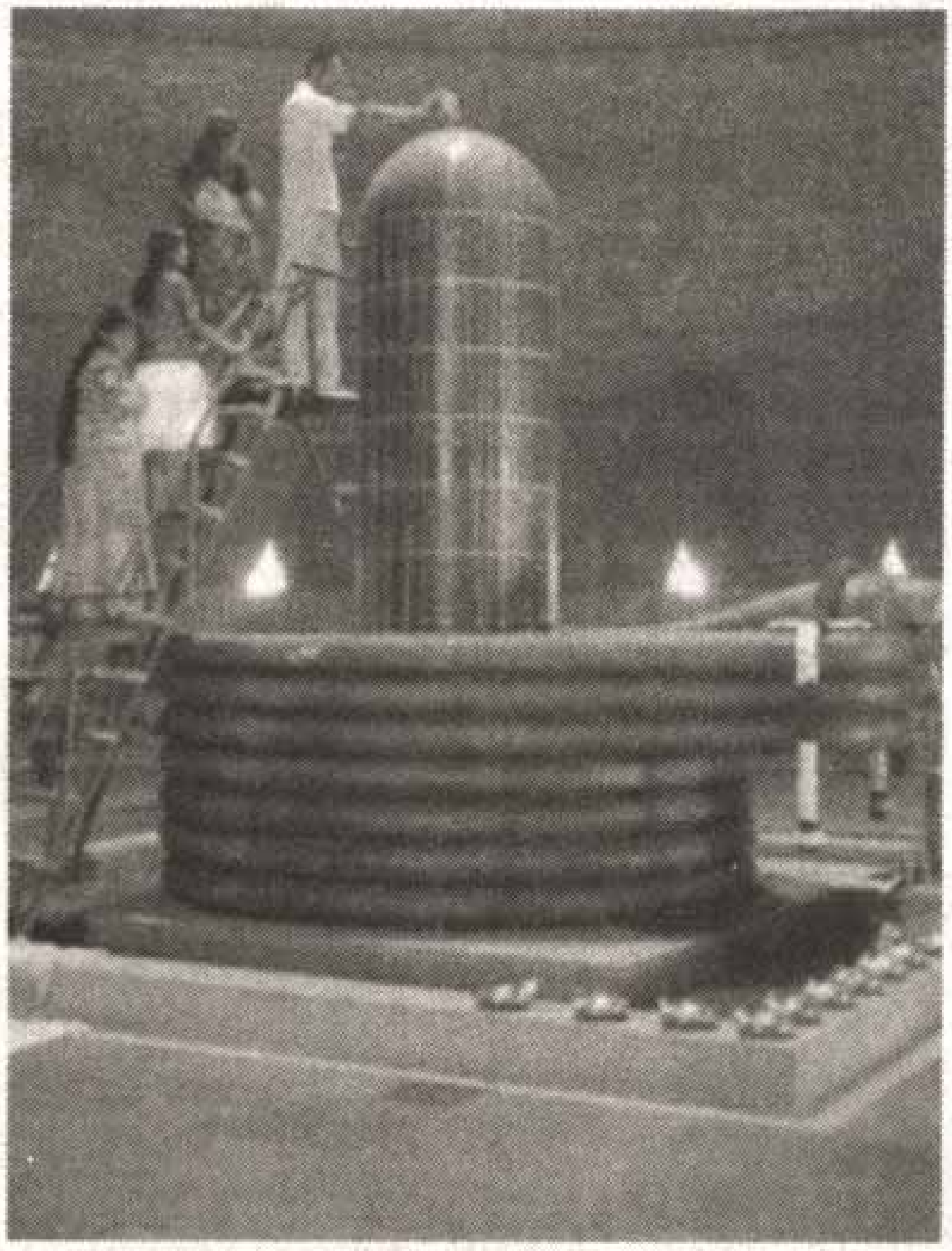

प्रत्येक आकाशगंगा का आंतरिक भाग अंडाकार है। एक पूर्णतया अंडाकार है जिसे लिंग कहा जाता है। अतः सृष्टि पहला रूप, जब अस्पष्टता से स्पष्टता की ओर बढ़ता है अर्थात् निराकार से आकार रूप में प्रकट होता है तब वह अंडाकार का ही रूप लेता है। हमारे अनुभव के अनुसार हम जानते हैं कि यदि आप अपनी ऊर्जा को एक निश्चित स्तर तक उठाते हैं तो जो अंतिम रूप आपकी ऊर्जा के पिघलाव से पहले जो भी अंतिम रूप आपकी ऊर्जा लेती है वह भी अंडाकार होता है।

तो दोनों अंत से परे, लिंग मुख्यद्वार है। सुस्पष्ट प्रकाश का पहला रूप अंडाकार है, पिघलाव का अंतिम रूप भी अंडाकार है। तो 'अ' और 'ज्ञ' तक के जो उत्पत्ति के कारण है वह लिंग है जो कि द्वार की तरह उस पार जाने में सहायक है यहां कोई भी धार्मिक कृत्य नहीं होता।

पारम्परिक रूप से धार्मिक कृत्य अस्तित्व की निश्चित प्रक्रिया को समझने के लिए किए जाते हैं। ये धार्मिक कृत्य इसलिए किए जाते हैं जिससे उन कृत्यों का स्थान निश्चित मात्रा में प्राण ऊर्जा इकट्ठा कर सके, जिससे लोगों को लाभ हो सके। अलग-अलग लाभों के लिए अलग-अलग प्रकार के धार्मिक कृत्य होते हैं। इन सबके पीछे विज्ञान है।

यदि ये मौलिक नियमों को ध्यान में रखते हुए किए जाएं व धार्मिक कृत्य को करने वालों को ध्यान में रखते हुए की जाएं कि वह कैसा है, और वो कितना योग्य है- तो निश्चित ऊर्जा क्षेत्र भी उत्पन्न किया जा सकता है, परन्तु ध्यानलिंग के क्षेत्र में धार्मिक कृत्य अर्थहीन है यहां ऊर्जा की प्रबलता अधिकतम है।

ध्यानलिंग की उपस्थिति ऊर्जा के रूप में बहुत शक्तिशाली है। इस प्रकार के स्थान पर किसी भी प्रकार का धार्मिक कृत्य सर्वथा निरर्थक है, क्योंकि यह ध्यानलिंग प्राण-प्रतिष्ठा से होकर निकला है। यह अपने आप में अत्यधिक प्रबल ऊर्जा का स्रोत है। जब ऊर्जा की प्रबलता का यह स्तर उपस्थित है तो धार्मिक कृत्य करना निरर्थक है क्योंकि धार्मिक कृत्य निश्चित प्रकार की ऊर्जा उत्पन्न करते हैं। ध्यानलिंग प्रत्यक्ष है उन सारे सातों चक्रों के साथ अपनी जगह पर है। जो जीवन के सात आयामों का वर्णन करते हैं। ध्यानलिंग ऊर्जा का पूर्ण तंत्र है। जिसे कोई भी व्यक्ति जीवन के विभिन्न स्तरों पर प्रयोग कर सकता है।

ध्यानलिंग के गुण

ध्यानलिंग की ऊर्जाओं का मूल महत्त्व है, इंसान की आध्यात्मिक उपज और विकास का पोषण करना ध्यानलिंग जीवन के सात विभिन्न गुणों को हफ्ते के सात दिनों में प्रकाशित करता है जिससे कोई भी विभिन्न लाभ प्राप्त कर सकता है।

सोमवार- पृथ्वी एक तत्त्व है और तत्त्व होने के कारण यह तत्त्व आध्यात्मिक ऊर्जाएं निकालती व फैलाती हैं। यह तत्त्व खाने और सोने की सीमाओं से आगे बढ़ने में हमारी मदद करता है। उपजाऊपन, संतान प्रसव, और शरीर व मन के दोषों को साफ करने में यह तत्त्व व्यक्ति को भावनात्मक व आर्थिक असुरक्षा से मुक्त करता है। यह मृत्यु के डर को भी हटा देता है। यह व्यक्ति को शरीर के अंदर और बाहरी संसार में ठोस रूप से स्थापित करता है। यह दिन बहुत सहायक है उन लोगों की अभिलाषा के लिए जो आध्यात्मिक शुरुआत करने की खोज कर रहे हैं। यह सभी विकासों का मूल है और मनुष्यों में दैवत्त्व की चेतना लाता है।

मंगलवार- जल तत्त्व होने के कारण, यह व्यक्ति के जीवन में तरलता व नम्रता लाता है ताकि वह अपना जीवन वैसे ही रच लें, जैसा वो चाहता है। यह मदद करता है, जनन में, कल्पना में, अंतर्ज्ञान में, और मानसिक स्थिरता में। यह दाम्पत्य संबंधों को सहारा देता है तथा आंतरिक बीमारियों को ठीक करने के लिए बहुत अच्छा दिन है।

बुधवार- अग्नि तत्त्व होने के कारण, यह जीवन में उत्साह उत्पन्न करता है तथा साधारण स्वास्थ्य भी ठीक रखता है। पाचन संबंधी समस्याओं, भौतिक सम्पन्नता, और स्वास्थ्य विशेषतः चार वर्ष से कम आयु के बच्चों की समस्याओं में सहायता करता है। यह भौतिक संतुलन और आत्म विश्वास लाता है। यह स्वार्थहीनता को पोषित करके शरीर के विषय में गहन समझ लाता है। यह कार्मिक बंधनों से शीघ्रता से मुक्ति कराता है।

बृहस्पतिवार- वायु तत्त्व होने के कारण, स्वतंत्रता इसका मार्ग है। यह दैविक खोज करने वालों के लिए महत्त्वपूर्ण दिन है। यह निम्न और उच्च ऊर्जाओं का मिलन और संतुलन है। प्रेम व भक्ति इसके मार्ग हैं। इसके द्वारा प्रभा और भोलापन व्यक्ति के गुण बन जाते हैं। यह कर्मबंधनों को छोड़ने का अच्छा दिन है।

शुक्रवार- आकाश तत्त्व होने के कारण, सीमा हीनता और स्वतंत्रता इसके मूल गुण है। नकारात्मक ऊर्जा से ग्रस्त, जादू, काला जादू और बुरी तरंगों से ग्रस्त लोगों के प्रकृति यह दिन शुद्धता देने वाला है। यह स्मृति, एकाग्रता, धैर्य और आत्मविश्वास तथा प्रकृति के साथ एकात्त्मता को बढाता है। यह दिन व्यक्ति की भोजन व पानी पर निर्भरता कम करता है।

शनिवार- महा तत्त्व होने के कारण, यह किसी भी द्विभाव या द्विस्वभाव से परे है। यह तत्त्व ज्ञान और परलौकिकता का नेतृत्व करता है। शांति इसका प्रबल गुण है जो स्वयं को समझ को खोज रहे हैं उनके लिए महत्त्वपूर्ण दिन है। यह व्यक्ति को पांच तत्वों से परे ले जाकर विवेक प्राप्त करने में सहायक है। यह व्यक्ति को ब्रह्मांड के नियमों से एक लय कर देता है और हर चीज से एक

होने में सहायता प्रदान करता है।

रविवार- यह जीवन के उत्सवों को सारी इंद्रियों से परे अंकित करता है। यह गुरु की कृपा पाने के लिए और व्यक्तिगत भ्रम तोड़ने के लिए सर्वोत्तम दिन है।

वास्तुकला

प्राचीन मंदिरों में जो देवताओं के घर का ढांचा होता था वह भी देवताओं के समान महत्त्वपूर्ण स्थान रखता था। मंदिर की परिक्रमा या चलने का स्थान, गर्भग्रह या मंदिर का अन्तरतम पुण्य स्थान, मूर्ति का आकार और उसका रूप, मूर्ति के द्वारा ली गई मुद्रा, और मंदिर को प्रतिष्ठित करते समय किए गए मंत्र, ये सभी मंदिर के मूलभूत पाप-दंड होते थे। यह तत्त्व एक निश्चित विज्ञान के अनुसार बराबर मिलाए और निर्मित किए जाते हैं और ऊर्जाओं की समझ पर आधारित, उसे शक्तिशाली ऊर्जाओं की परिस्थितियों को उत्पन्न करने और अंतर परिवर्तन को सहज करने के लिए। ध्यानलिंग 5000 वर्षों तक बिना किसी विनाश के बचाने के लिए यहां प्रतिष्ठित किया गया है।

अंडाकार गुंबद जो ध्यानलिंग को घर करता है, वह व्यास में 76 मीटर व 33 फुट ऊंचा है। इसे बिना किसी स्टील, सीमेंट या रोड़ी के बनाया गया है लेकिन ईंटों को मिट्टी के गारे में रेत, फिटकरी, चूने व जड़ी बूटियों आदि को मिलाकर चिना (जोड़ा) गया है। जो कि न केवल मजबूत है बल्कि अपने आप में नायाब भी है। जिस ढंग से इंटों को जोड़ा व रखा गया है वह तकलीफ भी निराली है। नमूने की प्रकृति इस गुम्बद की कम से कम 5000 वर्ष तक के जीवन काल का आश्वासन देती है। प्रत्येक महीने अमावस्या से एक दिन पहले शिवरात्रि कहते हैं। जो शिवरात्रि प्रत्येक वर्ष फरवरी, मार्च में होती है। वह अधिक शुभ मानी जाती है। और महाशिवरात्रि के रूप में मनाई जाती है। परम्परा के अनुसार महाशिवरात्रि की रात हर किसी को तमाम रात सचेत रहने की राय दी जाती है।

वैज्ञानिक रूप से महाशिवरात्रि की रात उत्तरी गोलार्ध में ग्रहों की दशा ऐसी होती है जो व्यक्ति की रीढ़ सीधी रखना लाभ पूर्ण होता है। कोई भी आध्यात्मिक साधना इस रात करने पर तंत्र पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः आध्यात्मिक पथ पर चलने वाले लोग अपनी साधना की प्रकृति को प्रबल करने के लिए इस दिन की अधिकाधिक सहायता लेनी चाहिए।

■ **प्रस्तुतिः रितु गोयल**